eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

आंदोलनधर्मी युवा की पक्षधर 'जनकवि' नागार्जुन की कविता

[1]डॉ. बॉबी यादव
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी, कु0मा0रा0 स्ना0 महिला महाविद्यालय, बादलपुर, गौतम बुद्धनगर, उ0प्र0

Received: 31 August 2023 Accepted and Reviewed: 31 August 2023, Published : 10 September 2023

Abstract

नागार्जुन आंदोलनधर्मी कवि हैं। उनका संपूर्ण जीवन जनांदोलनों में शिरकत करते बीता। वे आंदोलन चाहे सरकार के खिलाफ हों, पूँजीपतियों के विरूद्ध हों या फिर विदेशी शक्तियों के। युवा वर्ग देश का भविष्य होता है, वही आगामी सत्ता का नियामक होता है। उसी में किसी भी आंदोलन को पूरी तरह खींच पाने की शक्ति तथा माद्दा होता है। देश में अनेक छात्र आंदोलन हुए जिनमें से कईयों में नागार्जुन ने शिरकत की तथा उन पर कविताएँ लिखीं। ये आंदोलन अलग–अलग समय में तथा भिन्नदृभिन्न समस्याओं पर केन्द्रित थे। नागार्जुन ने समस्याओं की गहराई में जाकर उनकी पड़ताल की तथा उन पर टप्पणियां कीं।

बीज शब्द – शैक्षिक संस्थान, मानवाधिकार, बेरोजगारी, जातिवाद, छात्र आंदोलन, जनांदोलन, युवा वर्ग, इमरजेंसी, समाजवाद, सामाजिक अभियांत्रिकी, भारत–चीन युद्ध, छात्र हिंसा, वैयक्तिक स्वतंत्रता, तानाशाही, शिक्षा।

Introduction

हिंदी साहित्य के पुरोधा नागार्जुन को 'जनकवि' इसलिए माना जाता है क्योंकि उन्होंने अपनी कविताओं में भारतीय जनमानस के विचारों और उसकी आकांक्षाओं को अपनी लेखनी प्रदान करी तथा उसके समस्त सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विचारों, आचार, व्यवहार एवं समसामयिक घटनाओं, जिसमें राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय राजनीति भी सम्मिलित है को लेखनीबद्ध किया। जनकवि नागार्जुन ने अपनी कविताओं में युवा वर्ग को भी अहमियत दी क्योंकि वही मूलतः देश का भाग्य विधाता है और अपनी कविताओं के माध्यम से उसके विचार एवं व्यवहार को साकार रूप प्रदान किया। प्रस्तुत आलेख में हम 'जनकवि' नागार्जुन की कविताओं के माध्यम से आजादी के पश्चात युवा जनमानस के आकांक्षाओं को उकेरने का प्रयास करेंगे और विविध जनांदोलनों के प्रति युवाओं के विचार तथा उनकी भूमिका पर विमर्श करेंगे।

देश में छात्र आंदोलनों का स्वरूप काफी व्यापक है। एक स्वरूप वह है जो सन 1947 तक आजादी प्राप्त होने से पहले छात्रों द्वारा किए गए आंदोलन थे तथा दूसरा स्वरूप स्वतंत्रता के पश्चात छात्रों द्वारा किए गए आंदोलन हैं। दोनों स्वरूपों में मूल रूप से व्यापक भिन्नता है। पहले स्वरूप में शासन सत्ता के प्रति नकार और बहिष्कार की भावना है तथा अपने अधिकारों को प्राप्त करने की चेष्टा की ओर अधिक आकर्षण है जबकि दूसरे स्वरूप में वह संस्थागत सुधारों को करने एवं रोजमर्रा की समस्याओं को निपटने की ओर उठाया गया कदम अधिक प्रतीत होता है। यद्यपि आपातकाल के दौरान इसका स्वरूप एक अलग रूप अख्तियार करता है जो वैयक्तिक स्वातंत्र्य भावना, मानवीय गरिमा तथा मानवाधिकारों को आगे लेकर चलता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

स्वतंत्रता आंदोलन के समय छात्र–छात्राएँ देश की स्वाधीनता हेतु अपने–अपने स्कूल–कॉलेजों में गाँधी जी और अन्य नेताओं के कथनों को कार्य–रूप देते थे। अनेक छात्र पीकेटिंग करते थे, कपड़ों की होली जलाते थे, मुखबिरी करते थे तथा बड़ा होने पर क्रांतिकारी बन कर बम भी बनाते थे। स्वतंत्रता के पश्चात् छात्र आंदोलनों के स्वरूप में भी तब्दीली आई। ये अब वैयक्तिक स्वतंत्रता तथा सरकार की तानाशाही के खिलाफ लड़े जाने लगे। छात्रों के अनेक आंदोलन बेहतर सुविधाओं की मांग के लिए चलाए गए। बेहतर शिक्षा, अच्छे शिक्षक, किराया– माफी, फीस माफी, बजट का 5ः शिक्षा पर खर्च हो आदि मुद्दों पर छात्रों ने आंदोलन किए।

स्वातंत्र्योत्तर भारत में सर्वप्रथम देशव्यापी छात्र आंदोलन इमरजेंसी के दौरान हुए। श्रीमती इन्दिरा गाँधी की तानाशाही के विरुद्ध छात्रों ने संघर्ष का बिगुल बजाया। जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के छात्रों ने उन्हें कैंपस के भीतर घुसने से रोक दिया। पूरे देश में छात्रों ने इतना जोरदार प्रतिरोध किया कि उन्हें जेल में ठूंस दिया गया परन्तु वहाँ से रिहा होने के बाद ये छात्र राष्ट्रीय नेता बन गए। आपातकाल के दौरान जो छात्र नेता बने उनमें प्रमुख हैं– अरुण जेटली, विजय गोयल, नितीश कुमार, सुशील मोदी, लालू प्रसाद, मुलायम सिंह, प्रकाश कारत, वृंदा कारत, नीतीश कुमार, शरद यादव, अरविंद त्रिपाठी आदि। आगे चलकर ये लोग अलग–अलग खेमों में बंट गए। उनमें से कुछ तो समाजवादी–वामपंथी खेमों में चले गए और कुछ कांग्रेस और जनसंघ (बाद में भाजपा) में। यही छात्र बाद में चलकर 'सामाजिक अभियांत्रिकी' के प्रणेता बने और देश के भाग्य विधाता बने।

नागार्जुन ने देश भर के विशेषतः उत्तर भारत के छात्र आंदोलनों का उल्लेख अपनी कविताओं में किया है। इन छात्र आंदोलनों के संदर्भ में विद्वानों की निम्न राय है। वे छात्र आंदोलनों के तीन महत्वपूर्ण उत्प्रेरक मानते हैं– '(1) सर्वप्रथम युवकों की बढ़ती संख्या ने उन्हें अपने अधिकारों तथा वैधानिक आकांक्षाओं के प्रति जागरूक बनाया। सामान्यतः युवक अन्तर्वैयक्तिक संबंधों के मामले में उग्र होते हैं। आमतौर पर, वे युवक जो गरीब होते हैं तथा जिन्हें अपना भविष्य स्वर्णिम नहीं दिखता, अपने कार्यों तथा व्यवहार में उग्र हो जाते हैं। (2) दूसरे, अधिकतर मामलों में छात्र हिंसा जातिवाद से परिचालित है। (3) तीसरे, कुछ छात्र हिंसा छात्रों की वास्तविक शिक्षा–समस्याओं से संबंधित होती है।'1 नब्बे के दशक के छात्र आंदोलन कुछ दिग्भ्रमित से दिखते है। यह 'मंडल–कमंडल' का दौर था। अनेक छात्रों ने राजनैतिक दलों के इशारे पर आत्मदाह किए तथा उनके कंधों पर बंदूक रख कर इन दलों ने अपनी रोटियाँ सेकी और इन दलों ने अपने निहित स्वार्थों हेतु अनेक छात्रों की आहुति दी। इक्कीसवी सदी का आरंभ आते–आते अधिकतर छात्र संगठनों की नकेल राजनीतिक पार्टियों ने अपने हाथों में ले ली और वे उनके ही इशारों पर आंदोलन करते हैं, पीछे हटते हैं। अब छात्र समुदाय की वो निरपेक्ष भूमिका नहीं रह गई है जब वे अपनी माँग मनवाने के लिए शासन–सत्ता के खिलाफ एकजुट होकर संघर्ष करते थे। हाँ! कभी–कभी ये संगठन दिखावा मात्र के लिए अपनी आवाज जरुर बुलंद करते हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि छात्र आमतौर पर आंदोलन क्यों करते हैं? ऐसी कौन सी परिस्थितियाँ होती हैं जो उन्हें कड़ा कदम उठाने पर मजबूर करती हैं? वे कौन सी माँगे होती है जिनके लिए वे शासन के खिलाफ उठ खड़े होते हैं? इन सबके पीछे देश को सामाजिक–आर्थिक स्थिति जिम्मेदार है। भारत एक विकासशील देश है। आँकड़ों के अनुसार यहाँ की तकरीबन तीस प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे है, जबकि वास्तविक संख्या इससे कहीं अधिक है। यहाँ लोगों को भरपेट भोजन तो नसीब होता नहीं, शिक्षा–स्वास्थ्य की बातें तो बाद में आती हैं। इसलिए बहुसंख्यक छात्र अपनी

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

फीस जमा कराने के लिए पैसे नहीं जुटा पाते हैं। अतः फीस वृद्धि के खिलाफ ज्यादातर छात्र आंदोलन करते हैं। साथ ही बसों तथा रेलों में रियायती दर पर 'पास' की सुविधा हेतु भी छात्र आंदोलन करते हैं। अनेक बार शैक्षिक संस्थानों में पंखा–पानी–शौचालय आदि की समुचित व्यवस्था हेतु भी छात्र उठ खड़े होते हैं। उन शिक्षण–संस्थान में जो 'कैंपस' में होते है, अपराधी तत्वों से सुरक्षा मुहैया कराने हेतु तथा अनेक रोजमर्रा की सुविधाएँ प्राप्त करने हेतु भी छात्र आंदोलन करते हैं। अनेक बार शांतिपूर्ण जुलूसों पर पुलिस द्वारा की गई बर्बरता के खिलाफ भी छात्र लोग उग्र हो उठते हैं। साथ ही कभी–कभार अच्छे शिक्षक, लाइब्रेरी में पुस्तकों आदि की व्यवस्था के लिए छात्र आवाज उठाते हैं। परन्तु सबसे अधिक आंदोलन परीक्षाओं से संबंधित होते हैं। इन आंदोलनों में या तो परीक्षाओं को आगे सरकाने की बात होती है या फिर रद्द कर देने की मांग होती है। नागार्जुन छात्रों की आर्थिक स्थिति से वाकिफ थे तथा उनके प्रति सहानुभूति रखते थे। वे उसकी समस्याओं को गहराई से समझते थे तभी लिखते हैं–

''खून–पसीना किया बाप ने एक, जुटाई फीस
आँख निकल आई पढ़–पढ़के, नम्बर पाए तीस
शिक्षा मंत्री ने सिनेट से कहा– ''अजी शाबाश!
सोना हो जाता हराम यदि ज्यादा होते पास''
फेल पुत्र का पिता दुखी है, सिर धुनती है माता
जन–गण–मन अधिनायक जय हे भारत–भाग्य विधाता।''2

इस प्रकार पता चलता है कि कैसे गरीब छात्र अपनी शिक्षा के लिए पैसा जुटाते हैं। वे पढ़–पढ़कर अपनी आँखें फोड़ लेते हैं परन्तु उन्हें राजनीतिज्ञों के कुत्सित स्वार्थों का शिकार होना पड़ता है। अतः ये सब स्थितियाँ छात्रों को आंदोलन करने के लिए मजबूर करती हैं। अपने कुत्सित स्वार्थों की खातिर ही नेताओं ने पहला काम यह किया कि शिक्षण–वर्षो में बढ़ोतरी कर दी ताकि बेरोजगारों को शिक्षा पूरी होने के बहाने और अधिक समय तक टाला जा सके। उन्होंने पहले उच्चतर माध्यमिक शिक्षा को एक वर्ष से बढ़ाकर दो वर्ष किया। ऐसा उन्होंने देश के शिक्षण स्तर को सुधारने के नाम पर किया परन्तु इससे क्या लाभ हुआ यह तो हम सब जानते ही हैं। अभी हाल ही में यह प्रस्ताव आया है कि बी० एड० को एक वर्ष से बढ़ाकर दो वर्ष कर दिया जाए ताकि हमें उच्च कोटि के शिक्षक प्राप्त हो सके, परन्तु इसके पीछे भी लक्ष्य वही है। इसी क्रम में इग्नू तथा कुछ विश्वविद्यालयों ने बी० एड० को द्वि–वर्षीय कर भी दिया है। ये सब नीतियाँ ऊपर से देश के वृहत् लाभ के लिए बनाई जाती परन्तु इनकी परिणति छात्र–वर्ग के कुंठित होने में होती है। छात्रों की कुठा जब रुद्र रूप धारण करती है तो शासन सत्ता को जलाकर तहस–नहस कर देती है।

9 अगस्त 1955 का दिन छात्र आंदोलनों के लिए आरंभिक बिन्दु था। इस दिन पटना के बी० एन० कॉलेज के छात्रों के आंदोलन को कुचलने के लिए पुलिस ने गोलियाँ चलाई। इससे कुछ छात्र गम्भीर रूप से घायल हो गए तथा दीनानाथ नामक एक छात्र शहीद हो गया। इस छात्र को 'तर्पण' करते हुए नागार्जुन लिखते हैं कि–

''मै तर्पण करने आया हूँ अश्रु–नीर से
बी० एन० कॉलेज का प्रवेश द्वार
क्रांति का रक्त तीर्थ यह आज !''3

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

नागार्जुन कॉलेज के प्रवेश द्वार को 'क्रांति का रक्त तीर्थ' मानते हैं तथा शहीद को रक्त तीर्थ के 'अजर–अमर देवता'। नागार्जुन उसे आम व्यक्तियों की तरह 'बदतमीज' तथा 'हुल्लड़बाज' नहीं मानते अपितु उसे तानाशाही के खिलाफ लड़कर प्राण गँवाने वाला वीर मानते हैं। इसीलिए 'जनकवि की आँखों से आँसू बहे जा रहे हैं' तथा वे प्रार्थना करते हैं कि 'नयन–नीर से सिक्त पंक्तियाँ पुत्र करो स्वीकार!!' नागार्जुन इस गोलीकांड में शासक की भूमिका पर टिप्पणी करते हुए नेहरू को इसका दोषी मानते हुए उन्हें 'नाजियों के बाप' कहते हैं तथा प्रेस पर आरोप लगाते हैं कि वह डर के मारे सही खबरें जनता तक नहीं पहुँचा रही है।

इस व्यापक आंदोलन में नागार्जुन को 'महाक्रांति' की पदचाप सुनाई पड़ती है जो 'देसी सालाजार' को ललकार रही है। इस गंभीर संकट से घबराकर तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिंह ने भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरु को बुलाया तथा उनसे जनता का आक्रोश शांत करने की अपील की। अपनी कविताओं में नागार्जुन नेहरु के ऊपर प्रत्यारोप करके उनकी निष्पक्षता पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं। उन्हें चापलूसों से घिरा हुआ सिद्ध करते हैं जिन्हें न्याय की अपेक्षा अपनी पार्टी की सत्ता तथा चापलूसों का राज ही प्रिय है। उनके भाषण को सुनते हुए नागार्जुन की जो प्रतिक्रिया तत्काल हुई वह है–

''कीजिए बस आप!
मत बकिए अनाप–शनाप !
प्रभु हमारे ? नाजियों के बाप!''4

अक्टूबर 1966 में बिहार में फिर से तूफान आ गया। समस्तीपुर के छात्रों ने आंदोलन आरंभ कर दिया तथा बिहार के सभी विश्वविद्यालय तथा कॉलेज 31 अक्टूबर तक बंद कर दिए गए। इसके बाद भी छात्रों ने अपना आंदोलन स्थगित न किया और पुलिस–छात्र झड़पें होने लगीं। अंततः पुलिस ने अपनी बंदूकों का मुँह निहत्थे छात्रों की तरफ कर दिया। अनेक छात्र घायल हुए, कई मारे भी गए। इस पर नागार्जुन ने लिखा–

''गोलियाँ खाकर गिरे थे,
तरुण थे असहाय !
कफन तक तुम दे न पाए,
जी,
अकाल 'सहाय'!''5

उस समय बिहार के मुख्यमंत्री कृष्ण वल्लभ सहाय थे जिनकी सत्ता कुछ ही हफ्तों बाद उनके हाथों से खिसक गयी। नागार्जुन यहाँ पुलिस वालों को प्रेतों का समुदाय कह रहे हैं क्योंकि वे किसी भी प्रकार के नियम–कानूनों का पालन न करके जंगलराज स्थापित किए हुए थे। कुछ दिन बाद पुर्णिया शहर में तरुणों का आंदोलन रंग लाया और उन्होंने वहाँ एक बस फूँक दी। इसके बाद प्रशासन ने वहाँ कर्फ्यू लगा दिया। यह कर्फ्यू तीन दिन तक चला। इस पर नागार्जुन ने 'तीन दिन तीन रात' नामक कविता लिखी। उनके अनुसार यह "कविता लिखने के लिए मुझे तीन दिन उस माहौल में रहना पड़ा।''6 नागार्जुन की इस कविता की विशेषता इसमें व्याप्त तनाव है। 'इस कविता को पढ़कर लगता है जैसे सारा संसार थम गया हो, उसकी गति को लकवा मार गया हो। इस कविता में नागरिकों की परेशानी के साथ–साथ जीव–जंतुओं की धड़कन रुके रहने की बात कही

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

गयी है। नागार्जुन की कविताएं अपने गत्यात्मक रूप के कारण प्रसिद्ध हैं, जबकि इस कविता में आंतरिक लय के साथ अद्‌भुत स्थिरता लक्षित है।' यह उनके शिल्प को अपूर्व सफलता का द्योतक है। नागार्जुन विश्व चेतना सम्पन्न कवि है अतः उनके यहाँ वैश्विक हलचलें भी वर्णित हैं। वे केवल भारत के ही छात्रों पर नजर नहीं रखते अपितु अपने आस–पास के देशों के छात्रों की गतिविधियों का भी मूल्यांकन करते हैं। अपने पड़ोसी देश नेपाल के छात्रों पर नागार्जुन ने लिखा–

''उँगलियाँ चटकाई, सीने को तान लिया
बालों को बिजली की फुर्ती से झटक दिया
निकल पड़ा घर से और आगे बढ़ आया
– नेपाल का नौजवान !
सामने चीन और पीछे हिंदुस्तान''7

स्वतंत्रता के बाद का सबसे व्यापक छात्र आंदोलन आपातकाल के दौरान हुआ परन्तु इसकी सुगबुगाहट पहले से ही चल रही थी। श्रीमती गाँधी की तानाशाही दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही थी। अब उस पर रोक लगाना आवश्यक हो गया था। यह बर्बरता इतनी अधिक बढ़ गई थी कि–

''डी. आई. जी. रैंक का घुटा हुआ अधेड़ बर्बर
कमीनी निगाहों– तिहरी मुस्कानोंवालाय
मोटे होठों में मोटा सिगार दबाए है.....
वो अब तक कर चुका है,
जाने कितने तरुणों का नितंब – भंजन.....
जाने कितनी तरुणियों के भंगाकुर
करवा दिए हैं सुन्न
डलवा – डलवाकर बिजली के सिरिंज'' 8

इस प्रकार छात्रों के आंदोलन को कुचलने के लिए अनेक बर्बर तरीके अपनाए जा रहे थे। उन्हें थर्ड डिग्री टार्चर दिया जा रहा था। परंतु तरुण हार मानने को तैयार नहीं दिख रहे थे। उनकी इस गतिविधि को भांपकर नागार्जुन ने लिखा 'क्रांति सुगबुगाई है' और यह क्रांति 25 जून 1975 को आपातकाल की घोषणा के बाद फूट पड़ी। समस्त देश के छात्र सड़कों पर आ गए और श्रीमती गाँधी तथा उनके पुत्र की तानाशाही के खिलाफ व्यापक आंदोलन होने लगा। नागार्जुन ने ऐसे ही एक आदोलन पर अपनी कविता लिखी–

"धज्जी–धज्जी उड़ा दी छोकारों ने इमर्जेन्सी की
घूमते–फिरे लगातार चार घंटे
गलियों में सड़कों पर चौराहे–तिराहों पर.....
सारा नगर घूम आया विरोध का काला झंडा''9

आपातकाल के दौरान लगभग प्रत्येक शहर में यही दोहराया गया तथा श्रीमती गाँधी के पुतले फूंक गए। इस आपातकाल के दौरान सभी प्रमुख नेताओं को जेल में ठूंस दिए जाने के कारण सारे आंदोलन का नेतृत्व दूसरी पंक्ति के नेताओं ने संभाला। इनमें अधिकांश छात्र नेता थे, जिनके नाम तथा विचारधारा लेख के आरंभ में गिनवाए गए हैं। इस प्रकार हमने देखा कि नागार्जुन ने देश की अनेक छोटी–छोटी घटनाओं का अंकन करके आम आदमी का इतिहास अंकित किया है। इन

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

छात्र–आंदोलनों के माध्यम से नागार्जुन ने देश की धड़कन को पहचाना और उसके स्पंदन की लय को उकेरा जो नागार्जुन के समग्र काव्य की केन्द्रीय विशेषता है।

संदर्भ सूची–

1- Grover and Arora (Ed.)-Encyclopaedia of India and Her States-Volume-7, Deep & Deep Publication, New Delhi, 1998, page-425.

2. शोभाकांत (स.)– नागार्जुन रचनावली, भाग–1, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली 2003 पृष्ठ– 237

3. शोभाकांत (स.) – नागार्जुन रचनावली, भाग–1, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली 2003, पृष्ठ–286

4. शोभाकांत (सं.)– नागार्जुन रचनावली, भाग–1, राजकमल प्रकाशन, नयाँ दिल्ली, 2003, पृष्ठदृ 279

5. शोभाकांत (सं.) – नागार्जुन रचनावली, भाग–1, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2003, पृष्ठ–425

6. विजय बहादुर सिंह– नागार्जुन संवाद, रामकृष्ण प्रकाशन, विदिशा, 1994, पृष्ठ–37

7. शोभाकांत (सं.)– नागार्जुन रचनावली, भाग–1, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2003, पृष्ठ– 242

8. शोभाकांत (स.) – नागार्जुन रचनावली, भाग–2, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली. 2003, पृष्ठ–88

9. शोभाकांत (स.) – नागार्जुन रचनावली, भाग–2, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली 2003, पृष्ठ–106